

COTTON *Innovate*



Weekly Newsletter from Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Issue 1, Volume 5, May 2017

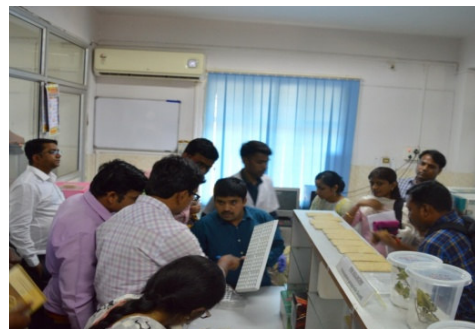
A weekly newsletter from ICAR-CICR

National Training on “Bt Resistance Monitoring of Pink Bollworm on Cotton” held at ICAR-CICR, Nagpur

Three days National Training on “Bt Resistance monitoring of pink bollworm on cotton” was held at ICAR-CICR, Nagpur from April 20-22, 2017. Purpose of this training was to enable cotton researchers to detect and manage resistance to Bt toxins in Pink bollworm populations as Pink bollworm is emerging as major pest of cotton in recent years. The training aimed to provide hands on experience on pink bollworm rearing and monitoring of pink bollworm resistance to Cry toxins. A total of 35 participants from 9 cotton growing states including Scientists, Research scholars and personnel from Industries participated in this training programme. The programme was inaugurated by Dr VN Waghmare, Head Division of Improvement, CICR, Nagpur. In his inaugural address Dr. Waghmare briefed about importance of Pink bollworm resistance management. Dr Blaise, Head Division of Crop Production, Dr Venugopal, Head PME Cell and Dr S B Nandeshwar, Head Biotechnology section also addressed the participants.



The Valedictory session was graced by Dr. S.V Sarode, Ex- Director of Research, Dr PDKV, Akola as Chief Guest. In his address Dr. Sarode informed about damage caused due to pink bollworm in extended cotton crop and strategies for its management. Dr. M.S. Ladaniya Director, ICAR-CICR, Nagpur emphasized on importance of early sown, early maturing, short duration cotton (150-160 days) varieties to escape the pink bollworm in cotton. Dr Mrs S Kranthi explains about the Current Scenario of Pink bollworm on Bt cotton in India and also remedial measures for its management.



The three day training programme included lectures on various topics as Current Scenario of Pink bollworm on Bt cotton, Sampling and rearing procedure for PBW, Bioassays methods Pink bollworm management on cotton, Production Strategies for limiting damage by Pink bollworm and immunodiagnostic tests for detection of Bt (cry) toxins.

This training programme was coordinated by Dr Sandhya Kranthi, Principal Scientist, Head /Ic, Division of Crop Protection, CICR, Nagpur and Dr V. Chinna Babu Naik, Scientist (Entomology) Division of Crop Protection, CICR, Nagpur.

News Paper Coverage

30 अप्रैल, 2017

जागरण सिटी
सिरसा/पंजाब

सफेद मक्खी पर तीन राज्य रखेंगे नजर

सिरसा केंद्रीय कपास अनुसंधान के कृषि वैज्ञानिकों की छह टीमों गठित, पिछले वर्ष किया था काफी नुकसान

जागरण संवाददाता, सिरसा : हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में कॉटन की फसल में सफेद मक्खी से निपटने के लिए अभी से प्लान तैयार कर लिया है। जिसके लिए सिरसा केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र के कृषि वैज्ञानिकों की 6 टीमें बनाई गई हैं। किसानों ने कॉटन की बिजाई का कार्य शुरू कर दिया है। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में सबसे ज्यादा कॉटन का उत्पादन किया जाता है। गौरतलब है कि दो वर्ष पूर्व सफेद मक्खी से काफी नुकसान हुआ। जिसके चलते प्रदेश सरकार ने किसानों को सफेद मक्खी से प्रभावित जिलों में मुआवजा भी बांट रही है। जिसके लिए 967 करोड़ रुपये की मुआवजा राशि मंजूर हुई है। प्रदेश में कृषि विभाग ने कपास की खेती के लिए 6.20 लाख हैक्टर का लक्ष्य रखा है।

सफेद मक्खी से निपटने के लिए बनाया गया प्लान : कपास की फसल में सफेद मक्खी से निपटने के लिए प्रबंध नीति तैयार की गई है। जिससे सफेद मक्खी से समय पर फसल को बचाया जा सके। प्रदेश सरकार ने इसके लिए नीति तैयार की है। जिसमें केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा, कृषि विभाग व कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों को इस नीति पर कार्य शुरू करेंगे। जिसके तहत समय समय पर सफेद मक्खी से फसल को बचाने के लिए समय पर सर्वे होगा। इसकी प्रति सप्ताह रिपोर्ट तैयार होगी।

केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा • जांगरम

तीनों जगह इसी सप्ताह से शुरू होगा जागरूकता अभियान

कृषि वैज्ञानिक सफेद मक्खी को रोकने के लिए इसी सप्ताह से कार्य शुरू करेंगे। जिसके तहत हरियाणा के सिरसा, हिसार, फतेहाबाद, जौंद व भिवानी में तीन टीम, राजस्थान के गंगानगर व हनुमानगढ़ जबकि पंजाब के मुक्तसर, बठिंडा, फाजिल्का में दो-दो टीम निरीक्षण करेंगी। इसी के साथ कृषि वैज्ञानिक प्रदेश के सभी जिलों में तेनात एडीओ (कृषि विकास अधिकारी) को प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिसमें सफेद मक्खी फलने पर किसानों की कैसे मदद करनी है। वहीं कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार किस कीटनाशक का प्रयोग करना है। वहीं किसानों को कपास की बिजाई समय पर करवाने व पकेती बिजाई नहीं करने के लिए जागरूक किया जाएगा। किसानों को परजीवी जैसे एनकारिशिया व एरैटमोसीरस व परभक्षी लेडीबर्ड भूंग, क्राइसोपा का संरक्षण व सर्वजन करने के लिए बताएंगे। ये सफेद मक्खी के बच्चे व च्यूको को खाते हैं।

जागरण विशेष

सफेद मक्खी के कारण वर्ष 2015 के अंदर हरियाणा में कपास का

सफेद मक्खी के कारण वर्ष 2015 के अंदर हरियाणा में कपास का नुकसान पंजाब से ज्यादा हुआ है। प्रदेश में 5 लाख 83 हजार हेक्टेयर में बिजाई की कपास की फसल में से 3 लाख 6 हजार हेक्टेयर पर सफेद मक्खी का कहर सामने आया है। पंजाब में 4.50 लाख हेक्टेयर में कपास बोई गई थी, जिसमें से 1.36 लाख हेक्टेयर सफेद मक्खी की चपेट में आई है। हरियाणा में 77 प्रतिशत क्षेत्र में 25 फीसद, 16 प्रतिशत क्षेत्र में 50 फीसद, 5 प्रतिशत में 75 फीसद और 3 प्रतिशत क्षेत्र में 75 फीसद से ज्यादा कपास को नुकसान हुआ है। जिसके तहत भिवानी में 40, हिसार में 10-15 प्रतिशत, फतेहाबाद में 15-20 और सिरसा में 10 फीसद नुकसान कपास की फसल को हुआ है।

क्या है सफेद मक्खी

सफेद मक्खी छोटा सा तेज उड़ने वाला पीले शरीर और सफेद पंख का कीड़ा है। छोटा एवं हल्के होने के कारण ये कीटा द्वारा हवा एक दूसरे से स्थान तक आसानी से चले जाते हैं। इसके अंडाकार शिथु पत्तों की निचली सतह पर बिपके रहकर रस चूसते रहते हैं। भूरे रंग के शिथु अवस्था पूरी होने के बाद वहीं पर यह च्यूपा में बदल जाते हैं। ग्रसित पीधे पीधे व तैलीय दिखाई देते हैं। जिन काली फेफूदी लग जाती है। जो पत्तों की खाने बनाने की प्रक्रिया कम कर देती है। यह कीड़े न कवेल रस चूसकर फसल को नुकसान करते हैं। बल्कि फेफूदी के प्रभाव से फसल की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। इस सबके अतिरिक्त यह कीड़ा कपास की भयंकर बीमारी पत्ता मरोड़ रोग पौधों तक फैलाते हैं।

सफेद मक्खी के नरमा की फसल को बचाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों की 6 टीमें बनाई गई हैं। गठित टीम हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में कॉटन की फसल पर नजर रखेंगी। इसके लिए प्रतिदिन रिपोर्ट तैयार करेंगे।

डॉ. दलीप मोंगा, निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र सिरसा



Produced and Published by:

Chief Editor :

Digital Editor, design & Media Support :

Editors:

Dr. M. S. Ladaniya, Director, CICR, Nagpur

Dr. S. M. Wasnik

Dr. M. Sabesh

Dr. J Annie Sheeba, Dr. Vishlesh Nagrare,

Dr. J Amutha, Dr. M Saravanan

Citation : Cotton Innovate, Issue-1, Volume-5, 2017,

ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.

Publication Note: This Newsletter presented online at http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html

Cotton Innovate is the Open Access CICR Newsletter

The Cotton Innovate – is published weekly by

ICAR-Central Institute for Cotton Research

Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010

Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;

email: cicrnagpur@gmail.com, director.cicr@icar.gov.in